RNI क्रं. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./261/भोपाल/2009-11

बीच की घण्टी

"हर बात की कोई वजह नहीं होती कप्पू!" अर्शी ने कहा। "तुम्हारे तो सवाल ही अजीब होते हैं। उल्टे सवाल तो मैं भी पूछ सकती हूँ। चल बता, मक्खी गुड़ पर ही क्यों भिनभिनाती है ?" कप्पू सिर खुजलाने लगा। अर्शी फिर बोली, "अच्छा, चल ये ही बता दे जब कुछ सूझता नहीं है तो सिर क्यों खुजलाते हैं?" कप्पू ने झट से हाथ हटाकर नीचे लटका दिया। उसने बाकी सब दोस्तों को समझाते हुए कहा, "हवा साइकिल से चलती तो तूफ़ान नहीं आते?" सब इस बात का अर्थ समझने में लगे थे। अर्शी ने कहा, "कप्पू, बात मत पलट।" "ठीक है तू फिर से उसे उसी तरफ पलटा ले।" कप्पू ने हाथों से पलटने का अभिनय करते हुए।

"दो मिनट बचे हैं चल घण्टी बजने ही वाली है।" अर्शी बोली। और छठी के सभी तेईस बच्चे कक्षा में चले जाते हैं। पीरियड हिन्दी का है। हिन्दी के गुरुजी आते हैं। "तो शैतानगंज में क्या चल रहा है जनाबो!" वे अकसर ऐसा ही कुछ कह कर अपनी बात शुरू करते हैं। अर्शी बोली, "गुरूजी, कुछ खास नहीं। बस नए साल की तैयारियाँ चल रही हैं।" उम्दू ने पूछा, "गुरुजी, जब आप हमारे बराबर थे तो नए साल में क्या-क्या करते थे? "मैं जब छोटा था तो नया साल आता ही नहीं था। मतलब हमें पता ही नहीं चलता था कि नया साल आया है और हमें उसे मनाना है। नया साल आ जाता था। उन दिनों एक-दो महीनों तक तो हम तारीख में पिछले साल को ही लिखते रहते थे। दो-एक महीने बाद मास्टर जी हमें याद दिलाते थे कि अरे, शम्भू अब तो नया साल लिखो भाई।" फिर मास्टर जी बोले, "सोचो, अगर ऐसा होता कि नया साल आया और जिसको उसके आने का पता चलता बस उसकी उमर बढ़ती तो क्या होता?" "तब तो गुरूजी कई लोग बड़े ही नहीं होते?" उम्दू, आँखों को बहुत चौड़ी करके बोला।... जैसे वे आँखें नहीं कोई जेब हों और उनमें गुरुजी ने जो बात अभी-अभी कही है वो रखनी है। सब लोग सोचने में लगे थे। "अच्छा, सोचो अगर दुनिया के सब कैलेण्डर आदि चीज़ें खत्म हो जाएँ तो हमें कैसे पता चलेगा कि अभी 2010 की जनवरी आने वाली है?" गुरुजी ने एक और सवाल किया। सब बच्चे पिछला वाला सोचना छोड़ कर इसे सोचने लगे। उम्दू को छोड़कर। वह बोला, "गुरूजी, अभी तो मैं पिछला वाला ही सोच रहा हूँ।" गुरूजी ने कहा, "चलो, जब पिछला वाला सोचना पूरा हो जाए तब इसे सोचना शुरू कर देना।" "ठीक है मास्टर जी" कहकर वह बैठ गया। बैठते ही उसकी नज़र बाहर खड़े एक नारियल के पेड़ पर गई। उस पर बीस-बाईस नारियल लटके थे। यह अन्दाज़ा लगाने के लिए नारियल का पेड़ कितना ऊँचा होगा उसने ज़मीन पर देखा। नारियल के ठीक नीचे दो-तीन मुर्गियाँ टहल रही थीं। उसके मन में झट से आया – "नारियल के नीचे भला कोई मुर्गियाँ पालता है?" उसे पता ही नहीं था कि वह सोचने के साथ-साथ बोल भी रहा था। सब हँसे। उम्दू को छोड़कर। उसने मास्टर जी से पूछा, "मास्टर जी, सब लोग क्यों हँस रहे हैं?" इस बात पर सब एक बार फिर हँस पड़े।

चित्रः आशुतोष भारद्वाज

सज्जाः कुनक

प्रकाशक एवं मुद्रक सी. एन. सुब्रह्मण्यम द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोनः 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादकः सुशील शुक्ल